शिवानी गुप्ता

शिवानी गुप्ता, भारत की जानी मानी एक्सेस कंसलटेंट हैं। इनकी संस्था 'एक्सेस एबिलिटी', एक आर्किटेक्चरल एक्सेस और यूनिवर्सल डिजाइन कंसल्टेंसी है जो विकलांग को ग्राहकों और कर्मचारियों के रूप में शामिल करने के लिए डिजाइन समाधान प्रदान करती है। 2014 में शिवानी ने प्रेरणादायक जीवन संस्मरण 'नो लुकिंग बैक', लिखा जो असंख्य बाधाओं के सामने न टूटने वाले मानव आत्मबल को दर्शाता है। दिल्ली में जन्मी शिवानी का शुरुआती जीवन एक आम लड़की की तरह बीता। एक कार दुर्घटना ने इस 22 वर्षीय लड़की का जीवन बदल दिया, स्पाइनल कॉर्ड में गहरी चोट से वो क्वाड्रिप्लेजिक हो गयीं। शैक्षणिक संस्थानों, होटल और रिटेल जैसे सार्वजनिक स्थानों की पहुंच में सुधार लाने के लिए शिवानी ने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा बिताया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने कई जाने माने संगठनों जैसे मानव अधिकार के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त, अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता गठबंधन (आईडीए), विकलांग पीपुल्स इंटरनेशनल (डीपीआई) और ईसाई ब्लाइंड मिशन (सीबीएम) के साथ कई प्रोजेक्ट्स पर सराहनीय काम किया है। विकलांगता क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा मिली है। उन्हें हेलन केलर अवार्ड (2008), कैविन केयर एबिलिटी मास्टरी अवार्ड (2008), नेशनल रोल मॉडल अवार्ड (2004), नीरजा भनोट अवार्ड (2004), रेड एंड व्हाईट सोशल ब्रेवरी अवार्ड (1999) और सुलभ इंटरनेशनल वुमन ऑफ द इयर अवार्ड (1996) से सम्मानित किया गया है।

जावेद अबीदी

जावेद अबीदी किसी परिचय के मोहताज नहीं। वे भारत में विकलांग लोगों के लिए रोजगार संवर्धन (एनसीपीईडीपी) के निदेशक और विकलांगता अधिकार समूह के संस्थापक हैं। अपने लम्बे संघर्ष और विकलांग साथियों के अधिकारों की लड़ाई में जावेद जी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में विकलांगों के लिए विधायी अधिकार और आर्थिक अवसरों को वास्तविकता में बदलने के लिए राष्ट्रीय लॉबी स्थापित करने से लेकर व्यापार और सरकार के साथ साझेदारी की स्थापना की। 57 वर्षीय जावेद जी रीढ़ की हड्डी के रोग के साथ जन्मे और चिकित्सा में लापरवाही के कारण व्हीलचेयर बाध्य हो गए। कुछ ही समय में अपनी क्षमता और हार न मानने के जज्बे के कारण वह एक जाने माने जर्नलिस्ट हुए। 1993 में जब उन्हें राजीव गाँधी फाउंडेशन की विकलांग यूनिट की स्थापना का अवसर मिला तो वह उन्होंने इसे एक अवसर की तरह लिया और विकलांगों के हित में इस फाउंडेशन से को समृद्ध किया। उन्होंने क्रॉस डिसेबिलिटी के मुद्दों पर विशेष रूप से काम किया। 1995 के विकलांगता अधिनियम के मसौदे तैयार करने और उसको पास करने में इनका बड़ा हाथ रहा। उन्होंने विकलांग पीपुल्स इंटरनेशनल के एक भारतीय अध्याय का पुनर्गठन किया। 1998 में उन्हें अशोका फेलोशिप से सम्मानित किया गया। जावेद जी ने कई बार ऐतिहासिक पहल कीं, चाहे बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एक्सीक्यूटिव्स को विकलांग व्यक्तियों को रोजगार देने की वकालत हो या भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को ऐतिहासिक सार्वजनिक स्थलों में रैंप लगाने के लिए राजी करना। 2004 में, विकलांगों के लिए मतदान केंद्रों को सुलभ बनाने के लिए जावेद जी ने एक याचिका दायर की जिस पर भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावी प्रक्रिया को सुलभ बनाने के लिए आदेश पारित किया था।

मधु सिंघल

मधु सिंघल जी का जन्म हरियाणा में हुआ वे जन्मान्ध थीं। माता-पिता के प्रोत्साहन से वे नियमित स्कूल में गईं और स्कूल के बाद एक शिक्षक से घर पर ब्रेल सीखी। जब बाकी बच्चे पेन और पेंसिल के साथ लिख रहे थे। उन्होंने कक्षा में ब्रेल में अपने नोट्स बनाये। वह एक महत्वाकांक्षी और आत्मनिर्भर बच्ची थी, जिसने सभी बाधाओं से लड़ते हुए न केवल सफलतापूर्वक अपनी शिक्षा पूरी की बल्कि हमेशा अव्वल आयीं और अपनी रुचि के अनुसार हिन्दुस्तानी संगीत में मास्टर्स की डिग्री ली। मधु जी नेत्रहीन लोगों के लिए कुछ करना चाहती थीं। उन्होंने 1990 में आठ अन्य समर्पित व्यक्तियों के साथ 'मित्र ज्योति' की स्थापना की। मित्र ज्योति को अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य बनाकर पिछले 27 वर्षों से मधु जी नेत्रहीनों के लिए निरन्तर काम कर रही हैं। असंख्य किताबों का ब्रेल में अनुवाद, नेत्रहीन बच्चों और युवाओं के लिए उपयुक्त रोजगार की ट्रेनिंग से लेकर आत्म निर्भर होने की ट्रेनिंग, मित्र ज्योति ने कई क्षेत्रों में उत्कृष्ट काम किया है। मधु जी की निस्वार्थ सेवा और मित्र ज्योति के कार्यक्रमों ने दुनिया भर के विभिन्न संगठनों से प्रशंसा बटोरी है। मधु सिंघल सभी के लिए एक सच्ची प्रेरणा है। दृष्टिहीन लोगों के कारण के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कुछ प्रमुख पुरस्कार उन्हें नेशनल एसोसिएशन ऑफ ब्लाइंड (एनएबी) से 2016 में सरोजनी-त्रिलोकनाथ पुरस्कार, 2008 में विकलांग लोगों के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, 2010 में आईबीएन 7 बजाज एलियांज पुरस्कार, 2001 में हेलेन केलर पुरस्कार, 2004 में कर्नाटक सरकार से विकलांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए राज्य पुरस्कार, Zee टेलीफिल्म्स लिमिटेड और अर्चना ट्रस्ट द्वारा Zee अस्तित्व अवॉर्ड प्राप्त हुए हैं।